

By:- Sunita Kumari
Dept. of History
J.N.C. Madhubani

B.A - History
classmate
Degree-I
Date
Page

Question:- गौतम बुद्ध के जीवन और उपदेशों पर प्रकाश डालें।
(Discuss the life and teaching of Gautama Buddha.)

महात्मा बुद्ध बौद्ध धर्म के संस्थापक थे। इनके वधपत का नाम सिद्धार्थ था। इनके पिता का नाम शुद्धोद्भवा और माता का नाम माया देवी था। शुद्धोद्भवा नेपाल की तराई में स्थित शाक्यवंश के राजा थे। शाक्यों की राजधानी कपिलवस्तु थी। प्रौढ़ावस्था में 563 ई. पूर्व माया देवी के यहाँ सिद्धार्थ ने जन्म लिया। जन्म के सातवें दिन उनकी माता का स्वर्गवास हो गया। अस्तु सिद्धार्थ का पालन पोषण माया देवी की छोटी बहन तथा महराज शुद्धोद्भवा की छोटी रानी महाप्रजापति ने किया। राजकुमार के जन्म के कुछ दिनों के पश्चात् एक आने बुद्ध प्रसिद्धि आसित उन्हें देखने आये। उन्होंने स्पष्ट किया कि राजकुमार के बारे में एक सधन आत्मा का निवास है। यह बड़ा डोहर एक बहुत बड़े धर्म की स्थापना करके लाखों व्यामिश्रों को सांसारिक बन्धनों से छुड़ाकर मुक्ति दिलाएगा। इसका नाम संसार में सदा के लिए अमर रहेगा।

—: चार बड़े संकेत और गृह त्याग: —

राजकुमार सिद्धार्थ के बड़े होने पर उनका पिता एक अति सुन्दर राजकुमारी यशोधरा के साथ हुआ। दोनों का वैवाहिक जीवन सुख और ऐश्वर्य से भरपूर था। कुछ समय पश्चात्, उन्हें एक आने सुन्दर पुत्रजन हुआ। परन्तु विधि के पंथों को कौन टाल सकता है। अन्तःकाल के समय गौतम ने चार ऐसे दृश्य देखे जिन्होंने उनकी जीवन-मार्ग की

उन्होंने बृह्म मनुष्य, रोगी, संन्यासी, और मृत व्यक्ति को देखा। इसके फलस्वरूप उन्होंने जीवन स्वास्थ्य और शरीर को अस्थायी तथा संसार को अनित्य और दुःखमय समझा। इसी प्रकिर्ण में एक रात वे अपने पुत्र, स्त्री, महल, धन-वैभव आदि को छोड़कर सत्य की खोज में निकल पड़े। यह घटना बौद्ध साहित्य में 'महाभिनिष्क्रमण' के नाम से जानी जाती है।

— ज्ञान की खोज : —

रातभर चलकर प्रातःकाल के समय उन्होंने अनेमा नदी पार कर अपने राज्य की सीमा के बहुरूपस्थान दिखा। नदी तट पर उन्होंने तपवार से अपने बाल काट डाले, आभूषण उतारकर छुट्का की हैदिए और उसे छोड़ के साधु वापस लाटा दिया। इसके पश्चात् एक किसान से वस्त्र बदलकर उन्होंने भिक्षु का रूप धारण किया और लगभग छः वर्ष तक साधु, मल्लमा और संन्यासियों विद्वानों और पंडितों के पास ज्ञान प्राप्ति और सांसारिक विषयों को दूर करने की विधियों की जानकारी के लिए भटकते रहे, परन्तु हर जगह उन्हें निराशा ही प्राप्त हुई। तत्पश्चात् गुरु की प्राप्ति में महाद्य की राजधानी में राजसूह पहुँचे। अंगारबालाम रामपुत्र आदि कई आचार्यों के सम्पर्क में गौतम आये; किन्तु ज्ञान की पिपासा शांत नहीं हुई। अन्त में साधियों सहित छः वर्ष तक खोर तपस्या की। तपस्या केपभाव से उनका शरीर आखिपंजर रह गया, परन्तु जिस अमूल्य रत्न की प्राप्ति के लिए उन्होंने यह त्याग कर भिक्षा तपस्या की थी, इस दुर्लभ रत्नद्वयी मोक्ष प्राप्ति के ज्ञान की लोभप्र

उनके पाँच साधियों ने उन्हें तप श्रद्धा ज्ञान उनका साथ
 छोड़ दिया। सिद्धार्थ अकेले थके-मारे एक विस्वाम नामक
 वृक्ष के नीचे बैठकर विग्राम करने लगे। उसी वृक्ष
 के नीचे वृक्ष व्रजत के लिए आई हुई युजाता नाम की
 ग्रामीण बधु के हाथ के खीर खाकर सिद्धार्थ ने अपना
 शुद्धा निवाला की और सात दिन सात रात लगातार
 अपने विगत जीवन के अनुभवों पर विचार करते रहे।
 विचार सागर में गीत लगाते-लगाते अचानक उसे
 सात रत्नी दुर्लभ रत्न की प्रतीति हुई। दिल ज्योति ने
 उसकी आत्मा का प्रकाश कर उसकी क्षाधता हल
 की। इसी वीरुआ हल सात की प्राप्ति कर राजकुमार
 सिद्धार्थ 'बुद्ध' बन गये और गौतम बुद्ध कहल गये।
 वह जीस का वृक्ष उसी समय से बोधिवृक्ष के नाम मल्लगत
 होकर बौद्ध मतानुसंगियों के लिए पूजनीय बन गया।
 इसी वृक्ष के नीचे विचारमग्न मुद्रा में बैठे हुए राजकुमार
 सिद्धार्थ को जो बोध हुआ वही बौद्ध धर्म कहलाता
 है।

— बौद्ध धर्म के उपदेश: —

उस समय की सामाजिक स्थिति को ध्यान
 रखते हुए बुद्ध को व्यवहारिक सुधारक कहा जा
 है। गौतम बुद्ध ने 'मध्यम मार्ग पद्धति' या 'मध्यम मार्ग'
 को अपने उपदेश का आधार बनाया।

नैतिक शिक्षाये (चार आर्य सत्य) गौतम बुद्ध ने चार आर्य
 तथा अष्टांगिक मार्ग पर चलने का उपदेश दिया।

चार आर्य सत्यः -

- (i) संसार में दुख ही दुख है।
(ii) दुख की जननी वृत्ता है :- वृत्ता के कारण ही अहंकार, ममता, राग-द्वेष, कलह आदि उत्पन्न होते हैं।
(iii) वृत्ता के नाश से दुख का नाश संभव है।
(iv) वृत्ता का नाश अष्टांगीय मार्ग से संभव है।

गौतम बुद्ध ने बताया कि दुख से मुक्ति मिलने के बाद प्राणी को निर्वाण की प्राप्ति होती है, इसके लिए अष्टांगीय मार्ग पर चमन को कहा गया है :-

1. सम्यक् दृष्टि :- बुद्ध ने चार आर्य सत्यों की व्याख्या की थी अर्थात् दुख का कारण, दुख का दमन तथा दुख के दमन के उपाय।

2. सम्यक् संकल्प :- सभी प्रकार के भोग-विलास और सांसारिक सुखों की कामनाओं का त्याग करना तथा अपने आपको सुधारने का संकल्प करना सम्यक् संकल्प कहलाता है।

3. सम्यक् वाक् (4) सम्यक् कर्मात्त (5) सम्यक् आजीव
6. सम्यक् व्यायाम 7. सम्यक् स्मृति 8. सम्यक् समाधि

गौतम बुद्ध ने अपने उपदेशों में आचरण पर भी बल दिया उन्होंने दस आचरणों का पालन आवश्यक बताया
① अहिंसा ② सत्य ③ अस्तेय ④ अपरिग्रह ⑤ ब्रह्मचर्य ⑥ नृत्य-गान का त्याग ⑦ संशोधित वस्तुओं का त्याग ⑧ अस्वभोज का त्याग ⑨ कामल शय्या का त्याग ⑩ कामिनी-कोचन का त्याग

बौद्ध धर्म ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता है। साव ही वेदों में भी विश्वास नहीं करता है। यह धर्म अनात्मवाद, कर्मवाद और पुनर्जन्म में विश्वास करता हुए जाति प्रथा का विरोधी है।